पुस्तक-प्रकाशन

हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र के प्रमुख उद्देश्यों में हिंदी शिक्षण हेतु शिक्षण-अधिगम सामग्री का विकास महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अतः केंद्र ने इस दिशा में प्रारम्भ से ही सम्यक ध्यान दिया है और ई-पाठ्य सामाग्री के साथ गुणवत्ता युक्त पुस्तकों का प्रकाशन भी किया है। इसके अंतर्गत अबतक कुल चार पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है और कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित होने की प्रक्रिया में हैं जो शीघ्र ही आपके सामने होंगी।

1-हिंदी शिक्षण का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य

आज हिंदी का जितनी तेजी से विस्तार हो रहा है उसके साथ हमें हिंदी शिक्षण को भी उसके समंजन में रखना होगा। इस समझ और ज़िम्मेदारी को महसूस करते हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र ने 'हिंदी शिक्षण का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य' शीर्षक पुस्तक का प्रकाशन किया है। यह पुस्तक शिक्षण अनुभव के आधार पर अन्य देशों के छात्रों और अध्येताओं को हिंदी सीखने और उसके प्रयोग में दक्ष बनाने एवं हिंदी का प्रचार-प्रसार करने के लिए तैयार की गयी है। इसमें हिंदी सीखाने के सूत्र, सिद्धान्त, शिक्षण-विधियों और प्रविधियों को प्रस्तुत किया गया है। हिंदी शिक्षण के दो पक्ष हैं: साहित्य और भाषिक कौशल का शिक्षण। यह पुस्तक दोनों के लिए उपयोगी है। इसमें विभिन्न कौशलों के विकास हेतु अभ्यास भी दिए गए हैं।

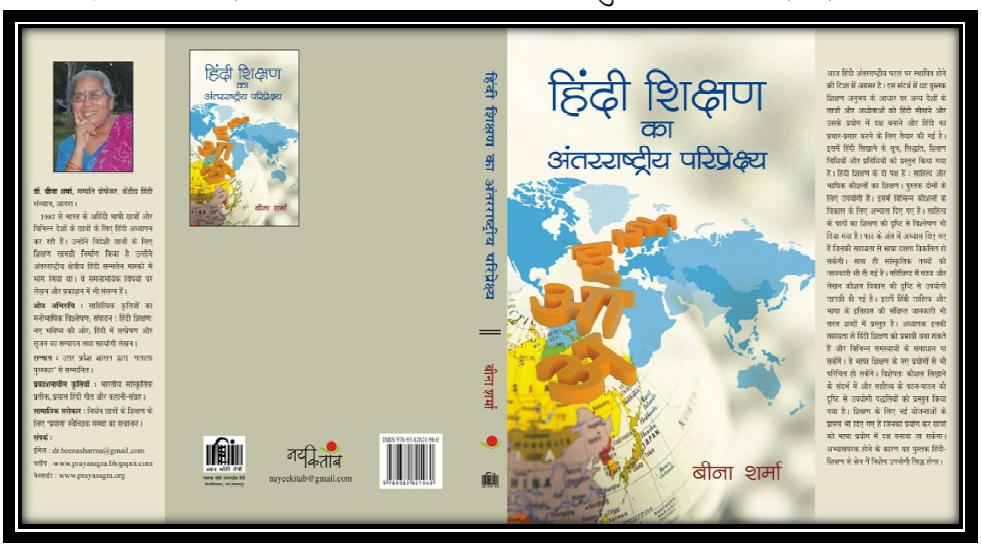

हिंदी शिक्षण का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य लेखक : प्रो० वीना शर्मा
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, संपादक : प्रो० गिरीश्वर मिश्र, कुलपति, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

2-भारत में शिक्षा: चुनौतियाँ और अपेक्षाएं

इस पुस्तक के लेखक जाने-माने मनोविद प्रो. गिरीश्वर मिश्र हैं। इस पुस्तक में भारतीय परिवेश में शिक्षा के सम्मुख उपस्थित चुनौतियों और विभिन्न पक्षों पर केन्द्रित लेखों, व्याख्यानों और साक्षात्कारों को संकलित किया गया है। इसमें उनकी मुख्य चिंता शिक्षा को मूल्यपरक, नवोन्मेषी और समावेशी बनाने की है। प्रो. मिश्र वर्तमान सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में युवा मन पर भी विचार करते हैं। वे शिक्षा में स्वराज और स्वदेशी पर बल देने के साथ ही शिक्षा को मूल अधिकार बनाए जाने की महत्व को भी रेखांकित करते चलते हैं। जहाँ वे शिक्षा पर गहन चिंतन में उतरते हैं वहीं एक सजग चिंतक की तरह शिक्षा की भाषा को भी लगातार दृष्टिपथ में रखते हैं।

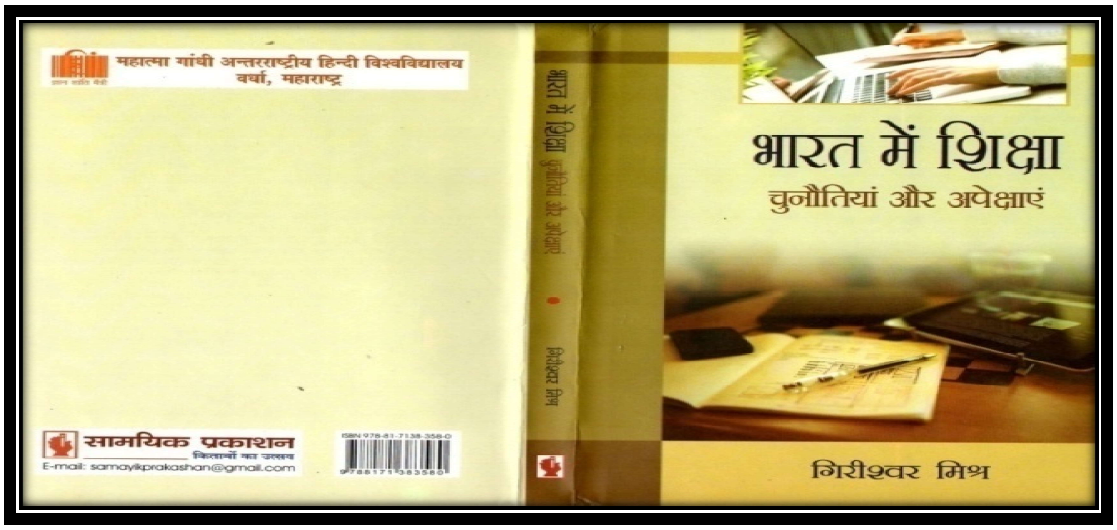

भारत में शिक्षा : चुनौतियाँ और अपेक्षाएँ, लेखक : प्रो० गिरीश्वर मिश्र,
कुलपति, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा
संपादक : प्रो. अरविन्द कुमार झा, शिक्षा विभाग, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

1. स्पेनिश-अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोश

हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र द्वारा 'स्पेनिश-अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोश' के निर्माण का काम महत्वपूर्ण है। आज स्पेनी भाषा-साहित्य को बोलने, सीखने और समझने वाले लोगों का एक उल्लेखनीय हिस्सा तैयार हो रहा है। हम हिंदी समाज को इस ज्ञान से अछूता नहीं रख सकते। हिंदी और स्पेनी भाषा के बीच एक सेतु रचने की आकांक्षा से इस कोश का निर्माण किया गया है। कोश के इस प्रथम संस्करण में 9000 शब्द सम्मिलित हैं। भविष्य में इसे और समृद्ध किए जाने की योजना है।

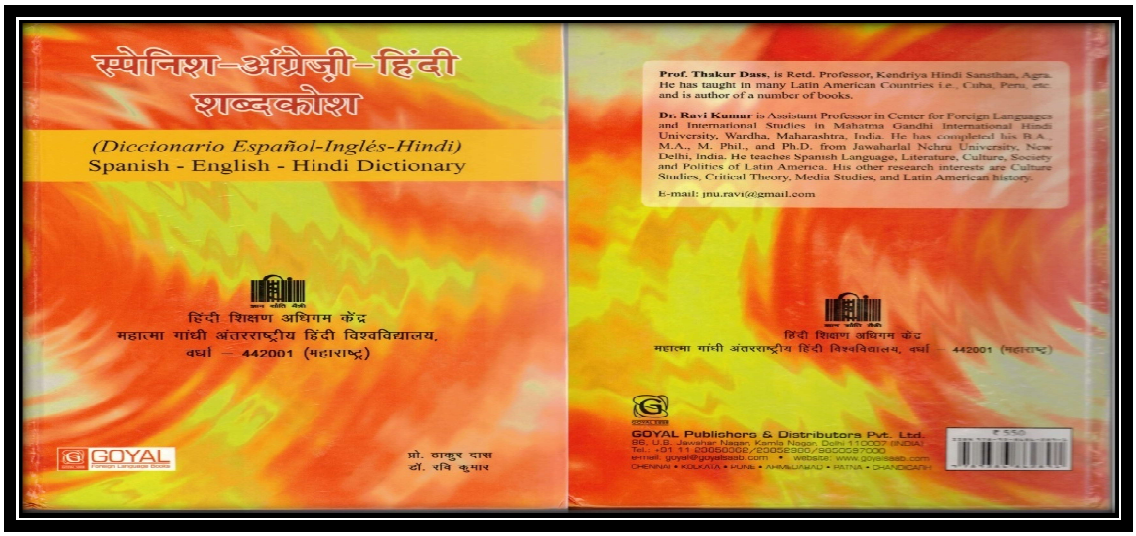

स्पेनिश-अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोश
संपादक : प्रो. ठाकुर दास , सेवानिवृत्त प्रोफेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
सह-संपादक : डॉ० रवि कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर, **विदेशी भाषा एवं अंतरराष्ट्रीय अध्ययन केंद्र**, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

4-धर्म और जेण्डर : धर्म संस्था के जरिए जेण्डरगत मानस का निर्माण

यह संचयन दो भागों में विभाजित है। पहले भाग के अंतर्गत दस आलेखों का संकलन है जो भारत, पाकिस्तान और चीन से संबंधित हैं। इन आलेखों को तीन विषय-वस्तुओं के तहत बाँटा गया है। पहली विषय-वस्तु में शामिल तीन आलेख जाति और धर्म के बीच अंतर्संवाद और उसके जेंडरगत परिणामों के बारे में सैद्धांतिक चर्चा करते हैं। दूसरी विषय-वस्तु में वे आलेख समाहित हैं जो भिन्न-भिन्न तरीकों से जेंडर का निर्माण करने वाले सांस्थानिक मानकों और नियमों की श्रेष्ठता के आत्मसातीकरण की चर्चा करते हैं। तीसरी श्रेणी में उन लेखों को शामिल किया गया है जो सीधे तौर पर महिलाओं के आंदोलन से संबंधित हैं या जहाँ धर्म के साथ नारीवादी संबद्धता है। इस अंतर्संबंध की अभिव्यक्ति अस्मिता-विमर्श, कट्टरपंथी सामूहिकता या धार्मिक-राजनीतिक आंदोलनों के रूप में होती है।

संचयन के दूसरे भाग में धार्मिक दृष्टि से महिलाओं के आचरण-संबंधी मानकों को निर्देशित करने वाली हिंदी और उर्दू की एक-एक प्रचलित पुस्तक ('बहिश्ती जेवर' और 'नारी शिक्षा') के चुनिंदा हिस्सों को शामिल किया गया है। ये उपदेशात्मक पुस्तकें हिंदू और मुस्लिम महिलाओं के आचरण और व्यवहार से जुड़ी जेंडरगत परम्पराओं को मज़बूत करती हैं। आशा है, पाठकों के सहयोग से यह शुरुआत एक सफल अंजाम तक पहुँचेगी।

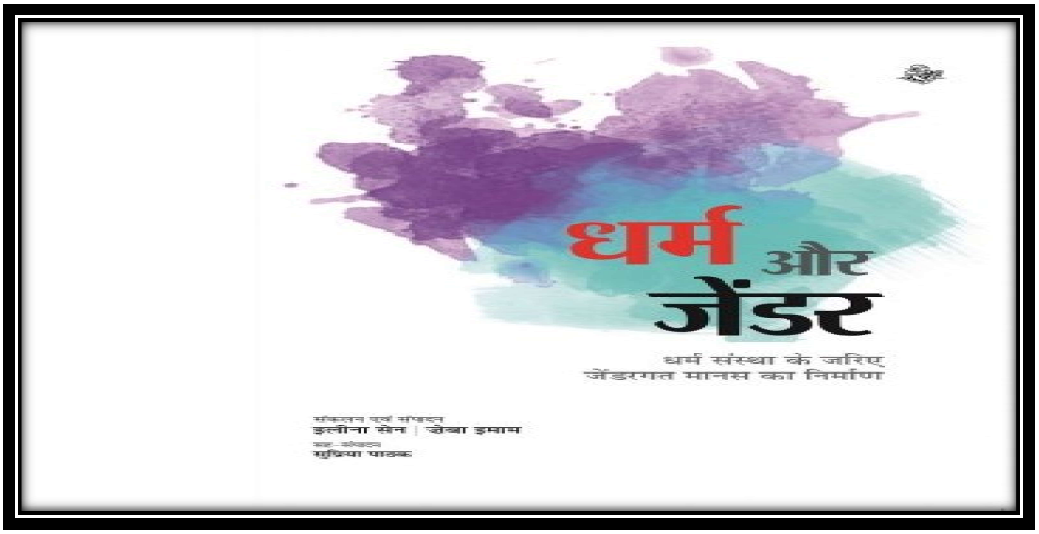

धर्म और जेण्डर : धर्म संस्था के जरिए जेण्डरगत मानस का निर्माण
अनुवाद और सम्पादन–स्त्री अध्ययन विभाग, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा और टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान, मुम्बई